Date
6/4/20

Philosophy

Kants Critical Philosophy

Short point (important)

i) ज्ञान और सत्य में अभिन्नता है सत्य सत् (beings) है जिसे जानना ज्ञान (knowledge) है,

ii) ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव और बुद्धि से होती है,

iii) अनुभववाद का स्रोत इन्द्रियानुभव को मानता है,

iv) बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है,

v) बुद्धिवाद ज्ञान को सार्वभौम, निश्चित और असंदिग्ध मानता है,

vi) अनुभववाद ज्ञान को संदिग्ध, अनिश्चित, नवीन और संभाव्य स्वीकारता है,

vii) बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान प्रागनुभविक और विश्लेषणात्मक है,

viii) अनुभववाद के अनुसार ज्ञान इन्द्रियानुभविक और संश्लेषणात्मक है

ix) अनुभववाद का आधार वस्तुनिष्ठ (प्राकृतिक) विज्ञान है

x) बुद्धिवाद का आधार गणित है,

xi) कान्ट समीक्षावाद का प्रवर्तक है,

Date 28/7/20

Western Philosophy

Kant's Critical Philosophy

इमानुएल कान्ट एक जर्मन दार्शनिक है। उन्होंने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों सिद्धांतों की समीक्षा करके उनके गुणों और दोषों को प्रस्तुत किया। इनके गुणों को लेकर ज्ञान की एक समुचित परीक्षा दी गई, इसलिए कान्ट के ज्ञान-सिद्धान्त को समीक्षावाद कहते हैं।

कान्ट के अनुसार बुद्धिवाद की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह कोई नया ज्ञान नहीं देता है। मानव-मन में निहित प्रत्ययों का विश्लेषण करके ज्ञान प्राप्त किया जाता है इसलिए ज्ञान नया नहीं होता, बल्कि पहले से जाना हुआ होता है, अतः बुद्धिवाद ज्ञान को प्रागनुभविक मानता है। कान्ट ने भी स्वीकार है कि ज्ञान प्रागनुभविक होता है लेकिन विश्लेषणात्मक नहीं होता है।

परन्तु ज्ञान का आरम्भ अनुभव से होता है कान्ट के अनुसार, अनुभववाद की त्रुटि है कि वह नया ज्ञान देता है पहले से कुछ भी जाना हुआ नहीं होता, बल्कि इन्द्रियसंवेदनाओं के ग्रहण के पश्चात ही ज्ञान होता है। परन्तु अनुभववाद की कमजोरी है कि वह निश्चित, असंदिग्ध और सार्वभौम ज्ञान नहीं दे पाता है, ज्ञान संभाव्य नहीं होता है बल्कि निश्चित और असंदिग्ध होता है। ऐसा ज्ञान बुद्धिवाद देता है यह बुद्धिवाद की त्रुटि है, इस प्रकार कान्ट ने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों की कमजोरियों को अस्वीकार करते हुए दोनों की विशेषताओं को स्वीकार किया, और ज्ञान को नवीन, सार्वभौमि असंदिग्ध और निश्चित माना है,